स्वतंत्रता आन्दोलन में पं. रामप्रसाद बिस्मिल का योगदान

कौशलेन्द्र उपाध्याय
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग ,
अम्बाह पी.जी. कॉलेज,
अम्बाह, मुरैना, (म.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र में महान क्रांतिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन में दिए गए योगदान का वर्णन किया गया है एवं उनके द्वारा किए गए कार्यों एवं उनके द्वारा रचित साहित्य से तत्कालीन युवा पीढ़ी पर जो प्रभाव पड़ा एवं उस प्रभाव से स्वतंत्रता आंदोलन को जो गति मिली तथा उनके विचारों से समाज में राष्ट्रभक्ति की भावना बढ़ी विशेष रूप से काकोरी कॉण्ड से युवा वर्ग में साहस का संचार हुआ। इस घटना से अंग्रेजों में भी भय का वातावरण पैदा हो गया एवं युवा वर्ग में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने का साहस पैदा हो गया तथा फाँसी से पूर्व अपनी माँ के लिए लिखे गए मार्मिक पत्र से समाज में राष्ट्र के लिए खुशी–खुशी मर मिटने का संदेश राष्ट्र को प्रदान किया।

मुख्य शब्द : काकोरी कॉण्ड, राष्ट्रभक्ति की भावना, विदाई सन्देश

प्रस्तावना

एक स्वतंत्रराष्ट्र, स्वतंत्रता सेनानियों द्वरा उनकी राष्ट्र भक्ति और भविष्य के देखे गये सपनों का परिणाम होता है[01] भारत विश्व का एक विशाल एवं समृद्धशाली देश है। यह अपनी श्रेष्ठ सभ्यता एवं संस्कृति के लिये प्रसिद्ध है भारत में ही मध्य प्रदेश को पंडित जवाहरलाल नेहरु के द्वारा हृदय प्रदेश नाम दिया गया है। भारतीय इतिहास में मध्य प्रदेश का चम्बल संभाग अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 1974 से पूर्व चम्बल संभाग ग्वालियर राज्य में ही शामिल था। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में निःसंदेह स्वतंत्रता संग्राम सैनानियो का इतिहास नतमस्तक करने योग्य रहा है। चम्बल क्षेत्र एक भोगोलिक अभिव्यक्ति है। इसमें भिण्ड़, मुरैना एवं श्योपुर क्षेत्र म.प्र. प्रान्त में आते हैं इस क्षेत्र के मुख्य कस्बे हैं भिन्ड़, मेहगॉव, गोहद, लहार, मुरैना, पोरसा, अम्बाह, जौरा, श्योपुर, कराहल एवं विजयपुर। इसी क्षेत्र के ग्राम रूअर बरबाई, तहसील–अम्बाह, जिला–मुरैना, म.प्र. के मध्यमवर्गीय कृषक परिवार से संबंधित पं. रामप्रसाद बिस्मिल के स्वतंत्रता आन्दोलन में दिए योगदान एवं उससे उत्पन्न प्रभावों का विश्लेषण शोधपत्र में किया गया है। पं. रामप्रसाद विस्मिल का नाम स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में सोने के अक्षरों में अंकित है। उनकी पंक्तियाँ ' सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।' जो स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जन–जन को आजादी के लिए मर–मिटने की प्रेरणा देती ही रही है। एंसे स्वतंत्रता सैनानियों और शहीदों के अदम्य साहस और बलिदान की गाथा हमारी युवा पीढ़ी तक पहुँचनी चाहिए, जिससे देश के होनहार नौजवानों को यह पता चल सके कि देश कि स्वतंत्रता यूँ ही नहीं मिली है। इसके लिए अनेक लोग फाँसी के तख्ते पर झूले हैं।[02] अनेक माताओं से उनके कलेजे के टुकड़े शहीदी का बाना पहनकर सदा के लिए बिछुड़े हैं। अनेक बहिनों का सुहाग छिना और बहुत–सी ऐसी प्रतिभाओं ने अपने प्राणों की आहुति दे डाली जो अभी जीवन के प्रांगण में पदार्पण कर ही रहे थे। भारत माँ के इन शहीदों ने समय की शिला पर अपना बलिदान अंकित कर देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करने की नींव डाली। [03] यदि ये बलिदान न होते तो पाता नहीं सुनहरी स्वतंत्रता का क्या होता।

प्रस्तुत शोधपत्र में स्वतंत्रता आंदोलन की पं. रामप्रसाद बिस्मिल की कुछ घटनाओं से उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी युवावर्ग तक पहुँचाने के साथ–साथ आन्दोलन में उनकी भूमिका तथा किये गये कार्यों से राष्ट्र के युवाओं में राष्ट्रभक्ति की चेतना उत्पन्न करना एवं पं. रामप्रसाद बिस्मिल के संस्कारों से युवाओं समाज, देश और समस्त मानवता के लिए निःस्वार्थ भाव से सब कुछ दॉव पर लगाने की भावना एवं देश की आन–बान–शान के लिए मर मिटने की तड़प पैदा करना ही इस शोध का उद्देश्य है। युवाओं को अपनी शक्ति एवं जोश का उपयोग सृजनात्मक राष्ट्रहित में लगाने किस प्रकार करना चाहिए को समझाने का प्रयास शोधपत्र में फांसी से पूर्व लिखे गये पत्र से किया गया है।

मेरे द्वारा इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए प्राइमरी डाटा के आधार पर चम्बल क्षेत्र के स्वतंत्रता सैनानियों से साक्षात्कार किया गया, जिसके आधार पर स्वतंत्रता आंदोलन में उनके द्वारा दिए गये योगदान की जानकारी ली गई । सेकेंण्ड्री डाटा के तोर पर विभिन्न पुस्तकालय में जाकर किताबों के आधार पर जानकारी एकत्रित की गई, जिससे कि शोध कार्य में पारदर्शिता लाई जा सके। महान क्रांतिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म तोमर राजपूत परिवार में हुआ [04] लेकिन अत्यधिक विद्वत्ता होने के कारण इन्हें पं. की उपाधि दी गई। पं. रामप्रसाद बिस्मिल काकोरी काण्ड के मुख्य नायक थे। आजादी का इतिहास गवाह है कि 9 अगस्त 1925 की रात लखनऊ जा रही आठ डाउन सहारनपुर–लखनऊ पैसेंजर गाड़ी में काकोरी और आलम नगर स्टेशनों के बीच सरकारी खजाने को लूट लिया गया। 1857 ई. के बाद भारत में ब्रिटिश राज्यों को इतनी बड़ी चुनौती, स्वाधीनता संग्राम में जुटे किसी भी राजनैतिक दल ने अब तक नहीं दी थी। चलती गाड़ी को जंजीर खीचकर रोकने से लेकर खजाने के सन्दूक को तोड़कर खजाना निकालकर शांतिपूर्वक चले जाने तक मात्र दस मिनटों में कुल दस युवकों ने यह चुनौती दी। ये दस युवक हिन्दुस्तान रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य थे जिनमें पं. रामप्रसाद बिस्मिल भी शामिल थे।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल के पूर्वज मूलतः ग्राम बरबाई तहसील अम्बाह जिला मूरैना के निवासी थे।[05] पं. रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म 4 जून 1897 ई. को हुआथा। इनके पिता का नाम मुरलीधर था।[06] पं. रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन का अधिकांश समय शाहजहाँपुर में बीता। पं. रामप्रसाद बिस्मिल की शिक्षा दीक्षा उत्तरप्रदेश के शाहजहाँपुर में हुई थी। बाल्यकाल से ही आपकी योग्यता और प्रतिभा के लक्षण दिखने लगे थे। आपको अनेक भाषाओं का ज्ञान था। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी तथा बंगला भाषा के आप महान ज्ञाता थे।[07] आपने समय के 'प्रभा' आदि मासिक पत्रों में 'अज्ञात' एवं 'राम' नाम से लिखते थे। क्रांतिकारी आन्दोलन एक प्रकार से इनके जीवन का आधार था। आपके जीवन पर आपकी माँ का अत्यधिक प्रभाव पड़ा था। आप मातृभक्त भी थे तथा आपके क्रांतिकारी जीवन में माँ ने अनेक शिक्षाएँ प्रदान कर सहायता पहुँचायी। बिस्मिल ने स्वयं कहा था कि महान से महान संकट में भी माँ तुमने मुझे अधीर न होने दिया। सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी को सुनाते हुए मुझे सांत्वना देती रहीं। इस ससार में मेरी किसी भी भोगविलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं है। केवल एक तृष्णा है वह यह कि एक बार श्रृद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके में अपने जीवन को सफल बना लेता। माँ मुझे विश्वास है कि तुम यह समझकर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता भारतमाता की सेवा में अपने जीवन को बलिवेदी की भेंट कर गया।[08] इसके अतिरिक्त स्वामी सोमदेव जी से आपको राजनैतिक धार्मिक शिक्षा उपदेशों के रूप में प्राप्त हुई।

आर्य समाज के प्रसिद्ध स्वामी सोमदेव एवं क्रांतिकारी पं. गैंदालाल दीक्षित का आपके जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ा। इनके द्वारा हिन्दी में लिखी गई पुस्तकें–आत्मकथा (निज जीवन की एक छटा), मन की लहर (कविता संकलन), वोल्शेविकों की करतूत (उपन्यास), केथोरायन (जीवनी) आदि थीं। इन्होंने मैनपुरी काण्ड पर भी एक पुस्तक लिखी थी, परन्तु वह कुछ कारणों से प्रकाशित होने से पूर्व ही जला दी गई। श्री बिस्मिल जी प्रमुख क्रांतिकारी भाई परमानन्द जी से अत्यधिक प्रभावित थे। सन् 1916 में लाहौर षडयंत्र केस चला [09]जिसमें प्रमुख क्रांतिकारी भाई परनानन्द जी को फाँसी हुई। पं. रामप्रसाद बिस्मिल परमानन्द जी की प्रमुख रचना तवारीख हिन्द से अत्यधिक प्रभावित हुए। यहीं से बिस्मिल जी के क्रांतिकारी जीवन का सूत्रपात प्रारंभ हो गया। पं. रामप्रसाद बिस्मिल क्रांतिकारी दल में शामिल हो गये तथा वे क्रांतिकारियों को अनेक प्रकार की सहायता पहुँचाने का कार्य करने लगे। ग्वालियर रियासत से अस्त्र–शस्त्र खरीदकर अपने साथियों तक पहुँचाने का कार्य किया करत थे। पं. रामप्रसाद बिस्मिल की बहिन शास्त्री देवी भी महान देशभक्त महिला थी।[10] वे भी क्रांतिकारियों की अनेक प्रकार से सहायता किया करती थी। शास्त्री देवी साहसी एवं निडर महिला थी। बिस्मिल जी ने 'केथेराइन', 'क्रांतिकारी जीवन' 'स्वदेशी रंग' आदि पुस्तकों की रचना की। इनमें हमें उनकी राष्ट्रीयता की भावना की जानकारी प्राप्त होती है। मैंनपुरी पड़यंत्र के मुखिया पं. गैंदालाल दीक्षित जब ग्वालियर जेल में बन्द थे तब बिस्मिल जी भेष बदलकर उनसे मिलते रहते थे।

[11]पं. रामप्रसाद बिस्मिल जब भी किसी क्रांतिकारी को घटना को अंजाम देते थे तो अंग्रेजों का दमनचक्र प्रारंभ हो जाता और वे पुलिस की गिरफ्तारी से बचने के लिए चम्बल के बीहड़ों में छुप जाते थे और यहाँ पर ग्रामों में रहकर अपना समय व्यतीत करते थे। काकोरी काण्ड से पं. रामप्रसाद बिस्मिल का महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।[12] भारत माता को आजाद कराने के लिए क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश हुकूमत पर हमला बोलना प्रारंभ कर दिया। लेकिन क्रांतिकारी घटनाओं को तब तक मजबूती प्रदान नहीं की जा सकती थी जब तक की पास में अच्छे हथियार न हों और हथियार खरीदने के लिए धन की आवश्यकता थी। अतः क्रांतिकारियों द्वारा सरकारी धन को लूटने का निश्चिय किया गया और काकोरी स्टेशन पर पं. रामप्रसाद बिस्मिल सहित दस क्रांतिकारियों द्वारा रेल के डिब्बे में रखा संदूक लूट लिया गया। संदेह के आधार पर बिस्मिल को घर से सोते समय गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में डाल दिया गय[T][13] कुछ और साथी भी पकड़े गये परंतु पुलिस सबूत नहीं जुटा पाई। पर एक साथी कमजोर निकला और वह सरकारी गवाह बन गया परिणामस्वरूप पं. रामप्रसाद बिस्मिल और उनके साथी असफाक उल्ला खाँ रोशन सिंह, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को 19 दिसम्बर 1927 को गोरखपुर जेल में फाँसी दे दी गई।[14] फाँसी के दिन वे अपनी तैयारी आप ही कर रहे थे और मुहूर्त की प्रतीक्षा कर रहे थे । मुहर्त की सूचना मिलते ही मुस्कराए और गंभीर स्वर से वंदे मातरम् और भारत माता की जय घोष किया और फिर हंसते खेलते उस भयानक प्रेताकार फाँसी के तख्ते पर चढ़ गये। र. रामप्रसाद बिस्मिल ने अपने अंतिम दिन अपनी माँ के लिए एक पत्र लिखा–

विदाई सन्देश

(पूज्यनीय माताजी सादर वन्दे)

कल आपसे भेंट करके मेरा उत्साह दुगुना हो गया और मैं बड़े हर्ष से प्राण त्याग करूँगा और आशा है कि आप मेरी मृत्यु के पश्चात् भी इसी प्रकार शान्त रहकर हर्षित होगी कि आपके तुच्छ सेवक ने देश सेवार्थ प्राण त्याग दिये। जबकि रोशन, लाहिड़ी, असफाक को फाँसी दी जा चुकी है

और मुझको भी एक घण्टे बाद फाँसी दे दी जायेगी, मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ कि भारतवर्ष के नवयुवकों के प्रति अपना अंतिम संदेश लिख छोडूँ। हमारी मृत्यु से किसी भी क्षति और उत्तेजना हुई हो उसको सहता उतावलेपन से कोई ऐसा कार्य नहीं कर डालना चाहिए कि जिससे मेरी आत्मा को कष्ट पहुँचे। यह समझकर कि अमुक ने मेरी मुखबरी कर दी अथवा अमुक पुलिस से मिल गया या गवाही दी इसलिए किसी की हत्या कर दी जाए या किसी को कोई आघात पहुँचाया जाए, मेरे विचार में ऐसा करना सर्वथा अनुचित तथा मेरे प्रति अन्याय होगा। क्योंकि जिस किसी ने मेरे प्रति शत्रुता का व्यवहार किया और क्षमा कोई वस्तु है तो मैंने उन सबको अपनी ओर से क्षमा किया। इसके दो कारण हैं।

1. भारतवर्ष का वायुमण्डल तथा परिस्थितियाँ इस प्रकार की है इनमें अभी दृढप्रतिज्ञ व्यक्ति बहुत कम उत्पन्न होते हैं।
2. मैं महर्षि दयानंद का अनुयायी हूँ जिन्होंने अपने जहर देने वाले को अपने पासे से रुपये दिये थे कि वह भाग जाए। यदि नवयुवकों में कोई जोश, उमंग उत्तेजना उत्पन्न हुई है तो उन्हें उचित है कि शीघ्र ग्रामों में जाकर कृषकों की दशा सुधारें, श्रमजीवियों की स्थिति को उन्नत बनावें, जहाँ तक हो साधारण जन समूह को सुशिक्षा दें, काँग्रेस के लिए कार्य करें और यथाशक्ति दतिलोद्धार के लिये प्रयत्न करें। जब इतने काम होंगे तो जिन्हें दण्ड देने की इच्छा है वे लज्जित होंगे और मेरी आत्मा को शान्ति प्राप्त होगी। मेरी यही विनती है कि कोई भी घृणा तथा अपेक्षा की दृष्टि से न देखा जाए किन्तु करुणा सहित प्रेमभाव का वर्ताव किया जए।

गोरखपुर डिस्ट्रिक्ट जेल
16–12–27

भवदीय
रामप्रसाद बिस्मिल

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने देश के स्वाधीनता आंदोलन में अभूतपर्व योगदान प्रदान किया इसके अतिरिक्त उनके द्वारा दिया गया नारा 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है देखना है जो कितना बाहुए कातिल में है।' युवाओं की जुवान पर चढ़ गया और भारत के युवाओं ने स्वतंत्रता के आंदोलन में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। पं. रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा रचित साहित्य से उस समय युवावर्ग में क्रांति की लहर दौड़ गई और प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से स्वाधीनता आंदोलन में पं. रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा देशभक्ति का माहौल पैदा किया गया जिसके परिणाम स्वरूप ही देश आजादी प्राप्त कर सका।

संदर्भ

1. एस.सी. राय चौधरी, आधुनिक भारत का इतिहास, सुरजीत पब्लिकेशन, दिल्ली, 1983, पृष्ठ 111 ।
2. बी. एन. लूनियां, आधुनिक भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, कमल प्रकाशन, इन्दौर, 1984, पृष्ठ 168 ।
3. अर्जुन सिंह भदौरिया, नींव का पत्थर, विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1992, प्रष्ठ 25 ।
4. डॉ. बी. एस. भार्गव. भारतीय इतिहास, 1957–1950, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2001, पृष्ट 2014 ।
5. माखनलाल चतुर्वेदी, कर्मवीर, मासिक पत्रिका, जबलपुर, 1925, पृष्ट 29 ।
6. दिनेश शर्मा, रामप्रसाद बिस्मिल, रचनावली 1. शुभम् पब्लिकेशन, शाहदरा, दिल्ली, 1997, पृष्ट 12 ।
7. कालूराम, प्रभा, मासिक पत्रिका, खण्डावा, 1925, पृष्ट 6 ।
8. मदनमोहन मालवीय, अभ्युदय, मासिक पत्रिका, प्रयाग, 1925, पृष्ट 17 ।
9. विमिनचन्द्र भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्याय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2004, पृष्ट 329 ।
10. दैनिक भास्कर (दैनिक समाचार पत्र), ग्वालियर, कानपुर, 13.08.2006 के आधार पर।
11. गणेश शंकर विद्यार्थी, प्रताप, मासिक पत्रिका, कानपुर, पृष्ट 21 ।
12. डॉ. जगन्नाथ मिश्र, आधुनिक भारत का इतिहास, उत्तर प्रदेश, मुद्रणालय, हिन्दी संस्थान ग्रन्थ अकादमी, 2005, पृष्ट 217 ।
13. कृष्णकांत मालवीय, मर्यादा, मासिक पत्रिका, प्रयाग, 1928, पृष्ट 24 ।
14. एल. पी. शर्मा. आधुनिक भारत, 1707–1967, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 1999, पृष्ट 415 ।